

कोकिल साईं की गाऊं जन्म वाधाई।

मैया सुखदेवी ने है नव निधि पाई॥

महा भाग जननी हो गद् गद् फूले,

देखि बाल मुख तन सुधि भूले,

प्रेम के हिण्डोले मैया बार बार झूले,

नौबत की ध्वनि भई बाजी शहनाई॥

बाबा की तपस्या आज सफल भई है,

लाड़ला लालन मिला मंगल मई है,

सिंधु वासियों पै भये दाहिने दर्ई है,

भये धन्य मीरपुर लोग ओ लुगाई है॥

आत्माराम स्वामी किये राम गुन गान,

तांको फल बाल मिले प्रेम प्रधान,

चित के उदार बाबा दिये बहु दान,

देते हैं वाधाई सब हियें हुलसाई॥
प्रेम के दातार साई बाल रूप धरे हैं,
सुर मुनि गगन से कल्प फूल झरे हैं,
जननी के स्तन में सुधा दूध भरे हैं,
बार बार पान करे सन्त सुखदाई॥
नाचें और गावें मिलि सबै नरनारी,
देत हैं वाधाई सन्त आंगन मंझारी,
चिर जीवे लाल यह आशीश उचारी,
अमड़ि गरीबि की है भई मन भाई॥